13

परमाणु भारः बदलते मानक और कुछ रोचक प्रसंग

बीसवीं सदी के शुरुआती वर्षों तक परमाणु भार निकालने की विधियाँ मूलतः रासायनिक थीं। जिस तत्व का परमाणु भार निकालना होता था उसके विभिन्न यौगिकों का भारात्मक विश्लेषण किया जाता था और फिर इनके आधार पर परमाणु भार की गणना की जाती थी। इस दौर में हाइड्रोजन और ऑक्सीजन के परमाणु भार को मानक बनाया था।

समस्थानिकों की खोज के बाद भी रसायनविदों में यह समझ बनी हुई थी कि तत्व में समस्थानिकों का अनुपात स्थिर बना रहता है। दूसरी ओर, भौतिकविदों ने बताया गया कि समस्थानिकों के स्रोत के हिसाब से समस्थानिकों का अनुपात भी बदलता है। इस खोज ने रसायनविदों के होश उड़ा दिए। तो, फिर परमाणु भार का मानक किस तरह से बनाया गया पढ़िए इस लेख में।

शिक्षा और बाल साहित्य

पिछले तीन दशकों में शिक्षा और समाज बड़े बदलावों से होकर गुज़रे हैं। शालेय शिक्षा में गुणवत्ता लाने और कक्षाओं में तनाव कम करने की दिशा में कुछ पहल की गई है। ऐसी ही एक पहल के तहत स्कूलों में पुस्तकालय खोले गए। वहाँ किताबों को पहुँचाने की कोशिश की गई।

ये बात बाल-साहित्य के सन्दर्भ में विशेष महत्व की है, क्योंकि शिक्षा में बाल-साहित्य को जगह बनाने के लिए काफी संघर्ष करना पड़ा है। तब जाकर पाठ्यपुस्तकों और शाला परिसर में बाल-साहित्य अपनी जगह बना सका है।

एकलव्य संस्था द्वारा प्रकाशित 'चकमक' पत्रिका के 300वें अंक के विमोचन के मौके पर कृष्णकुमार ने - शिक्षा व्यवस्था और समाज के ताने-बाने में बाल-साहित्य क्या स्थान रखता है, साहित्य सृजन के मौके किस तरह मिल सकें, साहित्य को किस तरह पढ़ाया जाए - जैसे मुद्दों पर अपने विचार प्रस्तुत किए हैं।

35

शैक्षणिक संदर्भ

अंक-23 (मूल अंक-80), मार्च-अप्रैल 2012

इस अंक में

4 | **आपने लिखा**

7 | **पौधों में मण्ड की जाँच - मेरा अनुभव**
ज्योति मिलिन्द मेडपिलवार

13 | **परमाणु भार: बदलते मानक...**
सुशील जोशी

25 | **क्या किलोग्राम कुछ हल्का या भारी...**
विनता विश्वनाथन

30 | **गणितीय इकाइयों के साथ स्वतंत्र लेखन**
वर्षा लाळगे

35 | **शिक्षा और बाल साहित्य**
कृष्णकुमार

49 | **हम ध्वनि को देख या प्रकाश को सुन...**
सवालीराम

51 | **नई कोपलों का सृजन**
सुजाता वरदराजन

62 | **तू डाल-डाल तो मैं पात-पात**
किशोर पंवार

67 | **बड़े होकर तुम बनना**
रिनचिन

76 | **दीमक एक अद्‌भुत वास्तुकार**
पारुल सोनी